om 8 initial_Page 1 and 2 10-07-2014 21:34 Page 11

गांधीनगर। केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति इरानी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कैलाश।

मोतिहारी-विहार। केन्द्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सीता।

पुणे-वोपोडी। 'अलविदा डायबिटीज़' शिविर के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं ब्र.कु. सुनीता, डायबेटिक विशेषज्ञ डॉ. श्रीमन्त साहू, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. पारु, डॉ. डी.वाय. पाटील मेडिकल कॉलेज के डीन प्रो. अमरजीत सिंह, सोमेश्वर फाउण्डेशन के अध्यक्ष तथा पूणे के विधायक कार्यसम्राट विनायक निम्हण, ब्र.कु. सुनील तथा अन्य।

दिल्ली-आर.के.पुरम। वृक्षारोपण करने के पश्चात् समूह चित्र में राकेश सिंघल,डी.जी.सेवा भवन, कर्नल मोहन,डायरेक्टर सी.सी.सी.आई.लि., मि.सिद्धू, रिटायर्ड विंग कमाण्डर, मि. धर्मवीर,काउंस्लर, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. ज्योति, संजय वर्मा, राजेश वर्मा तथा अन्य।

मेलबॉर्न। मधुबन से ब्र.कु. रामलोचन व ब्र.कु. सूर्यमणि के सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया व थाइलैण्ड में रिट्रीट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भाई बहनें।

भरतपुर। मातेश्वरी के समृति दिन पर संबोधित करते हुए ब्र.कु.कविता, मंचासीन डॉ.मुदगल, मिशल कालरा,आयकर अधिकारी, देवनानी, जिला सिन्धी समाज अध्यक्ष,भरतपुर तथा अन्य।

माधुर्य से मनुष्य में नम्रता, शिष्टता, सहृदयता आदि उदात्त गुणों का उदय होता है, जिनसे जीवन प्रकाशपूर्ण और शांत बन जाता है, क्रोध उसके पास नहीं आता है, क्रोध मानव जाति का सबसे बड़ा शत्रु है, क्रोध से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है, उसे उचित-अनुचित का विचार नहीं रहता। मृदुभाषी कभी क्रोध नहीं करता, कभी किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करता, वह सबको स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखता है। मृदुभाषी समाज में सद्भावना और सह-अस्तित्व का संचार करता है। इस प्रकार वह समाज के उत्थान में भी सहयोग देता है।

माधुर्य का महत्व

- ब्र.कु. शोभिका, शांतिवन

क्या बेचारा कौआ किसी का कुछ लेता है? यदि नहीं तो, फिर लोग उसे आराम से अपने घरों की छतों पर, मुंडेरों पर, क्यों नहीं बैठने देते? घृणा यहाँ तक बढ़ गई है कि उसके दर्शन को भी अपशगुन समझा जाने लगा है। किसी शुभ कार्य के लिए जाने से पूर्व लोग दिखा लिया करते हैं कि बाहर कौआ तो नहीं बैठा है। इसके विपरीत कोयल समाज को क्या देती है? समाज उसकी वाणी को शुभ और दर्शनों को प्रिय क्यों समझता है? सोने के पिंजड़ों में बंद होकर कोयल राज-दरबार की शोभा बढ़ा सकती है तो क्या कौए को पिंजड़ों में बंद होकर किसी झोपड़ी में चार चाँद लगाने का अधिकार नही? यह व्यवहार विभेद प्राणी के गुण-अवगुणों पर आधारित है। यदि आप में गुण है तो आप पराये को भी अपना बना सकते हैं। मधुर भाषण से मनुष्य, पशु-पक्षी भी प्रिय बन सकते हैं। यह वह रसायन है जिससे लोहा भी सोना बन जाता है, यह वह औषधि है, जिससे मानव के समस्त हृदय के विकार दूर हो जाते हैं, यह वह वशीकरण मंत्र है, जिससे आप दूसरों के हृदय में बैठ जाते हैं, यह वह बाण है, जिससे मनुष्य के हृदय में घाव नहीं होता, अपितु स्नेह की मधुर व्यथा उत्पन्न हो जाती है। यह वह अमृत है, जिससे मृत प्राणों में भी जीवन का संचार हो उठता है।

जीवन और जगत को सुखी और शांत बनाने के लिए माधुर्य से अधिक लाभदायक वस्तु और क्या हो सकती है। श्रोता और वक्ता दोनों को आनंद-विभोर कर देने वाली यह मधुर वाणी समाज की पारस्परिक मान-मर्यादा, प्रेम-प्रतिष्ठा और श्रद्धा-विश्वास का आधार-स्तंभ है। इसके अभाव में समाज कलह, ईर्ष्या-द्वेष और वैमनस्य का घर बन जाता है। जिस समाज में पारस्परिक सौहार्द और सहानुभूति नहीं, वह समाज नहीं नरक है। मधुर बोलने वाले मनुष्य का समाज में आदर होता है। मधुरभाषी के मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द सुनने वालों का जी लुभाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो इसके मुख से फूल झड़ रहे हों। सम्पर्क में आने वाले असंबंधित व्यक्ति भी अपने बन जाते हैं और उसका आदर करने लगते हैं।

मीठे वचन बोलने से केवल श्रोता को ही आनंद नहीं आता बल्कि वक्ता की भी आत्मा आनंद का अनुभव करती है। कहने और सुनने वाले दोनों को शांति लाभ होता है, परंतु वक्ता को एक विशेष लाभ यह होता है कि उसके मन की अहंकारी, दम्भ और गौरवपूर्ण भावनाएं स्वत: ही समाप्त हो जाती हैं। अहंकारी व्यक्ति कभी मधुर-भाषी नहीं हो सकता, दूसरे के हृदय को दु:खी करने में वह अपना जी-बहलाव समझता है।

माधुर्य से मनुष्य में नम्रता, शिष्टता, सहृदयता आदि उदात्त गुणों का उदय होता है, जिनसे जीवन प्रकाशपूर्ण और शांत बन जाता है, क्रोध उसके पास नहीं आता है, क्रोध मानव जाति का सबसे बड़ा शत्रु है। क्रोध से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है, उसे उचित-अनुचित का विचार नहीं रहता। मृदुभाषी कभी क्रोध नहीं करता, कभी किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करता, वह सबको स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखता है। मृदुभाषी समाज में सद्भावना और सह-अस्तित्व का संचार करता है। इस प्रकार वह समाज के उत्थान में भी सहयोग देता है।

बड़े-बड़े शस्त्रों का प्रहार वह काम नहीं कर सकता, जो मनुष्य की कटु वाणी कर देती है। शस्त्रों के घाव चिकित्सा से भर जाते हैं, पर वाणी के घावों की कोई चिकित्सा नहीं, समय-समय पर उसमें ऐसी टीस उठती है कि मनुष्य तिलमिला जाता है। कटु वाणी से मनुष्य दूसरों के हृदय को तो दुखाता ही है, परंतु स्वयं भी स्थान-स्थान पर अनादर का पात्र बन जाता है। कड़वा बोलने वाले से कोई बात तक करना पसंद नहीं करता, उसके दु:ख-दर्द में किसी की सहानुभूति नहीं होती। भद्र लोग उसे अशिष्ट समझते हैं, साधारण उसे दुष्ट कहते हैं। वह घर और बाहर अनाहत ही नहीं होता, कभी-कभी पिटाई की नौबत भी आ जाती है।

कटु भाषी की प्रत्येक स्थान पर निंदा होती है, उसका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है, सभ्य समाज में उसे आमंत्रित नहीं किया जाता। ऐसा व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होता है और बुद्धिहीन होता है। जहाँ मधुर-भाषी को विद्वान देवता की उपाधि देते है, वहाँ कटु-भाषी को राक्षस की। जहाँ मधुर भाषण अमृत है, वहाँ कटु भाषण एक जहरीला बाण।

हमें सदैव मीठी वाणी का प्रयोग करना चाहिए। मीठी वाणी बोलने से कई बिगड़े हुए काम भी बन जाते हैं, हम सभी की नज़रों में सम्मान के पात्र बन जाते हैं। कोई भी हमसे नाराज़ नहीं होता एवं सम्बन्धों में परस्पर स्नेह बना रहता है। मधुर बोलने वाला व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर सफलता प्राप्त करता है और कटु बोलने वाला व्यक्ति प्रतिभाशाली होते हुए भी अपने व्यवहार के कारण सफल नहीं हो पाता। मीठी वाणी बोलने से व्यक्ति का संसार के हृदय में अपना एक स्थान बन जाता है और सभी उसको प्रेम एवं आदर के साथ याद रखते हैं। मीठी वाणी संसार को एकसूत्र में बांधकर रखने में सक्षम है जबकि कटु वाणी से दूरियां और ही बढ़ती जाती हैं।

समाज में जिन महापुरुषों ने उच्च पद और उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त की है, वे सभी बड़े मृदु-भाषी हुए हैं। इसीलिए समाज आज भी उनका कीर्तिगान करते हुए नहीं थकता। उन्होंने अपने मधुर व्यवहार से पाषाण हृदयों को भी पानी-पानी कर दिखाया था। मनुष्य को जीवन में उन्नत बनने के लिए मधुर भाषण की बड़ी आवश्यकता है। इससे समाज में प्रतिष्ठा, गौरव और ख्याति प्राप्त होती है। हमें अपना चरित्र उज्ज्वल बनाने के लिए मृदु-भाषी होना चाहिए, तभी हम देश में एकता स्थापित कर सकते हैं, तभी हम विश्वबंधुत्व की भावना को आगे बढ़ा सकते हैं, देश के सच्चे नागरिक भी हम तभी हो सकते हैं, जब हम समाज में सहयोग और सहानुभूति रखते हों। मधुर भाषण और मधुर व्यवहार के अभाव में न सहयोग है और न सहानुभूति ही।

अध्यात्म से -पेज 1 का शेष... आगे खुली किताब की तरह है। समाजोत्थान के पहले स्वोत्थान पर ही ब्रह्माकुमारीज़ में ज़ोर दिया जाता है। उन्होंने कहा कि राजयोग एक ऐसी औषधि है जो मन की दूषित भावनाओं को समाप्त कर देता है।

वाई.पी. दास,रोटरी प्रांतपाल,सुनाम ने कहा कि समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने के लिए सर्वप्रथम स्वयं को उत्तम विचारों के आयाम देने होंगे। मानवीय मस्तिष्क में जितने अधिक शान्तिदायक विचार उत्पन्न होंगे उससे उतना ही अधिक मानसिक शक्ति का विकास होगा। उन्होंने कहा कि अध्यात्म से ही विज्ञान का भी सदुपयोग होगा और वैज्ञानिक गतिविधियां समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।

प्रकाश पोडवाल,उपाध्यक्ष,नेपाल बैंक ऑफ कॉमर्स ने कहा कि वर्तमान परिवेश में मनुष्य ने भौतिकता के आधार पर बहुत प्रगति की है किंतु मूल्यों के मामले में बहुत पिछड़ रहा है। समाज सेवकों को गहन चिंतन करने और दूसरों के कल्याण के लिए सदैव चिंतित रहने की ज़रूरत है।

ए.एन. जिंदल,पूर्व जस्टिस,पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय ने कहा कि लोक कल्याण और देश के विकास के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं का मतभेदों को भुलाकर एकमत होना, यही समय की मांग है, तभी हम भारत को सोने की चिड़िया बनाने में कामयाब हो सकेंगे। प्रभाग उपाध्यक्ष ब्र.कु. अमीर चंद ने कहा कि समर्पणमयता की भावना की शिक्षा को जीवन में अंगीकृत करने से जन कल्याण की भावनाओं को बल मिलेगा। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. प्रेम, मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. अवतार, अधिशासी सदस्य ब्र.कु. सीता आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।